भारत–पाक सीमा समस्या/विवाद
(Indo-Pak Border Problem/Dispute)

परिचय (Introduction) – भारत–पाक सीमा विवाद से पूर्व हम जम्मू–कश्मीर की जानकारी प्राप्त करते हैं। युद्ध कौशलात्मक दृष्टि से अति महत्वपूर्ण राज्य (पूर्व रियासत महाराजा हरी सिंह) जम्मू–कश्मीर की स्थापना 26 अक्टूबर, 1947 को हुई थी, जो पूर्व से पश्चिम तक 800 किमी0 और उत्तर से दक्षिण तक 480 किमी0 के बीच फैला हुआ है। यह 32°17′ उत्तरी अक्षांश से लेकर 29°58′ उत्तरी अक्षांश तक तथा 73°29′ पूर्वी देशान्तर से 81°30′ पूर्वी देशान्तर तक विस्तृत है। इसके उत्तर में अफगानिस्तान, उत्तर–पूर्व में चीन व सोवियत रूस, पश्चिम में पाकिस्तान, दक्षिण में हिमाचल प्रदेश व पंजाब प्रदेश स्थित हैं। इसकी सीमायें उत्तर व उत्तर–पूर्व में चीन से, पूर्व में तिब्बत से, उत्तर–पश्चिम में अफगानिस्तान तथा पश्चिम में पाकिस्तान से मिलती है। भौगोलिक दृष्टि से इस राज्य को चार भागों में बांट कर देख सकते हैं। **प्रथम** भाग में पहाड़ी और अर्द्ध पहाड़ी मैदान है जो कण्डी पट्टी के नाम से प्रचालित हैं। **दूसरा** पर्वतीय क्षेत्र है जिसमें शिवालिक जैसी उच्च पहाड़ियां व शिखर शामिल हैं। **तीसरा** कश्मीर घाटी के पहाड़ और पीर पंजाल पर्वतों वाला क्षेत्र है। यहां हिमालय तक पीर पंजाल के मध्य 128 X 32 किमी0 लम्बी–चौड़ी सुन्दर कश्मीर घाटी है, समुद्रतल से 2150 मीटर ऊँची है। **चौथा** क्षेत्र है तिब्बत से लगा लद्दाख और कारगिल, जो अब तक के सभी युद्धों का कार्यस्थल रहा है। यहां की प्रमुख सड़क पठानकोट से जम्मू होती हुई बनिहाल दर्रे और जवाहर सुरंग द्वारा होती हुई श्रीनगर को जोड़ती है। लेह–मनाली सड़क विश्व की सबसे ऊँची सड़क है जो 1965 से 1969 तक तैयार की गयी। लगभग 485 किमी0 लम्बी है और भू–भाग से लगभग 4270 मीटर ऊँची है। यह रोहतांग (3978 मीटर), बारालाचा (4883 मीटर), लाचालुंगल (5065 मीटर) और थांगलागला जैसे दर्रों (5328 मीटर) से होकर गुजरती है। इसने चण्डीगढ़ से लद्दाख के बीच की दूरी को काफी कम कर दिया है। सबसे कठिन मार्ग कश्मीर में लेह से तिब्बत तक फिर सिक्यांग तक जाता है, जो काराकोरम दर्रे (18000 फीट) से गुजरता है। श्रीनगर–कारगिल–लेह सड़क विशेष सामरिक महत्व की है जो कश्मीर घाटी को लद्दाख से मिलाती है। यही एकमात्र आपूर्ति मार्ग है। जाड़ों में यह बर्फ से बन्द रहता है। 1965, 1971 व 1999 के युद्धों में पाक ने इस पर संकट पैदा कर दिया था। अब यहां कई प्रमुख मार्ग सरकार द्वारा तैयार किये हैं और आगे भी कार्य चल रहा है। राज्य में विभिन्न प्रकार की सड़कों की लम्बाई 13540 किमी0 है तथा रेलमार्ग की लम्बाई 1995–96 तक 88 किमी0 तक थी। लगभग 2044 वर्ग किमी0 क्षेत्र में यहां जंगल फैला हुआ है। यहां केन्द्र की दो सार्वजनिक इकाइयाँ कार्यरत हैं तथा 30 मध्यम श्रेणी के उद्योग लगे हैं। राज्य में कुल 14 जिले हैं।

जम्मू–कश्मीर राज्य का कुल क्षेत्रफल 2 लाख 22 हजार 236.2 वर्ग किमी0 है। श्रीनगर (ग्रीष्मकालीन) व जम्मू (शीतकालीन) यहां की राजधानी है। उच्च न्यायालय एक है और कश्मीर डिवीजन में 8 जिले और जम्मू डिवीजन में 6 जिले आते हैं। यहां से लोकसभा के लिए 6 व राज्यसभा के लिए 4 सदस्य चुने जाते हैं। 1000 पुरूषों पर

Scanned by CamScanner

900 महिलायें हैं। जनसंख्या 10069917 है (1991–2001 की जनगणना के अनुसार)। इस राज्य का 78,114 वर्ग किमी0 क्षेत्र पी0 ओ0 के0 के रूप में पाकिस्तान के पास है। इस प्रकार पी0 ओ0 के0 का क्षेत्रफल भी 78,114 वर्ग किमी0 है। इस समय लगभग 42,735 वर्ग किमी0 क्षेत्र चीन के पास है जो लद्दाख क्षेत्र का भाग है। कारगिल व अक्साईचिन इसी क्षेत्र के भाग हैं। 1947–48 के युद्ध में पाकिस्तान ने इस भारतीय राज्य कश्मीर का 72,800 वर्ग किमी0 भू–भाग कब्जा लिया था। युद्ध विराम के बाद भी पाकिस्तान 78,114 वर्ग किमी0 ज़मीन (भारत की) वापस नहीं की। यही जमीन पी0 ओ0 के0 कहलाती है। इसमें से 5180 वर्ग किमी0 भूमि पाकिस्तान ने 2 मार्च, 1963 को 99 वर्ष हेतु चीन को पट्टे पर दे दी थी। 37,555 वर्ग किमी0 जमीन चीन ने 1962 के युद्ध में कब्जा करली थी। असल विवाद यहीं पर है। कुछ प्रामाणिक साक्ष्य इस समझौते की तिथि 31 मई, 1962 बताते हैं जो सत्य प्रतीत होती है। क्योंकि इस भू–क्षेत्र की प्राप्ति से चीन को भारत पर हमला करने का सुदृढ़ आधार प्राप्त हो गया था। यदि युद्ध के बाद समझौता किया गया तो यह भू–कूटनीतिक समझौता था।

ऐतिहासिक आइने में कश्मीर– कश्मीर की संस्कृति लगभग 5000 वर्ष पुरानी बताई जाती है। 'राजतरंगिणी' तथा नीलमत पुराण के अनुसार कश्मीर घाटी के स्थान पर पहले एक विशाल जल युक्त झील थी। महर्षि कश्यप ने वराहमूल (बारामूला) के पास पर्वत को काटकर जलराशि के निकास मार्ग वितस्ता नदी में कर दिया। इससे झील का पानी नदी में जाने पर झील का तल यहां–वहां पर कुछ छोटी–मोटी झीलों से युक्त रमणीक घाटी में बदल गया। इसे कश्यप मर्ग (वर्तमान कश्मीर) कहा गया है। भू–गर्भ शास्त्रियों के अनुसार भू–गर्भीय परिवर्तनों के कारण खदियानयार, बारामूला के पहाड़ जमीन में धंसने से झील का पानी बहकर बाहर निकलने पर यह कश्मीर घाटी अस्तित्व में आयी। यहां पर द्वापर के अन्त में राजा के युद्ध में मारे जाने पर तथा युवराज के अल्पवय होने के कारण श्री कृष्ण भगवान ने पुरोहितों के द्वारा रानी 'यशोमति' का राज्याभिषेक कराया था। ईसा पूर्व तीसरी शताब्दी में मौर्य वंशीय सम्राट अशोक महान ने श्रीनगर की स्थापना की थी। कश्मीर में बौद्ध धर्म का प्रचार–प्रसार कराया। यहीं पर कट्टर बौद्धमत हीनयान और उदार महायान मत फूला–फला था। स्पष्ट है कि यह राज्य क्षेत्र सम्राट अशोक के विशाल साम्राज्य का भाग था। छठी शताब्दी के आरम्भ में कश्मीर पर हूणों का कब्जा हो गया, जो 530 में घाटी पुनः स्वतंत्र हो गयी। कुषाण सम्राट कनिष्क ने बारामूला के निकट कनिष्कपुर (वर्तमान कंसपुर) बसाया और महायान बौद्धमत का केन्द्र स्थापित किया और अनेक बौद्ध विहारों का निर्माण कराया था। यह उज्जैन साम्राज्य का भी भाग रही थी। कश्मीर के हिन्दू शासकों में (8वीं शताब्दी) महाराजा ललितादित्य (697–738 ई0) सबसे ख्याति प्राप्त राजा हुआ, जिन्होंने यहां अनेक सुन्दर भवनों, बगीचों व बागों का निर्माण कराया। कश्मीर की श्री समृद्धि चारों ओर दूर–दूर तक फैली हुई थी। अरब के बर्बर आक्रान्ताओं और लुटेरों ने भारत पर 637 ई0 में, फिर 712 ई0 में हमला किया तो इनका हिन्दू नरेशों ने मिलकर सामना किया और नष्ट कर दिया। मध्य भारत के शासक यशोवर्मन व ललितादित्य ने संयुक्त रूप से शत्रु का मुकाबला किया। इसमें शत्रु को काफी क्षति उठानी पड़ी। आक्रन्ताओं के प्रवेश रोक दिये गये और यहां लम्बे समय तक शांति बनी रही। महमूद गजनवी के हमलों के समय (1000–1001) कश्मीर में ब्राह्मण–वंश का राज्य था जिसकी मलिका रानी दिद्दा थी।

1286 में यहां मंगोलों ने आक्रमण किया था। इस समय कश्मीर का शासन सुहादेव नामक राजा के हाथों में था। इसकी मृत्यु के बाद राज्य प्रशासन उसके भाई

Scanned by CamScanner

उदयन देव के हाथों में आया, जिसकी मृत्यु शीघ्र ही हो जाने पर महारानी 'कोटा रानी' ने अपने अल्पवय पुत्र के नाम पर स्वयं शासन संभाला था। महारानी के दरबार में शाहमीर नामक एक खुरासानी (श्वात) मुस्लिम दरबारी था, जिसने धीरे--धीरे सत्ता में पकड़ मजबूत कर ली थी। शाहमीर के बढ़ते प्रभाव पर किसी ने ध्यान नहीं दिया तो एक दिन उसने अपने सहयोगियों की मदद से महारानी के पास विवाह प्रस्ताव भिजवाया, जिसे महारानी ने ठुकरा दिया। उसने षडयंत्र रचकर बलपूर्वक अवसर मिलते ही महारानी को अपने हरम में डाल दिया तो दूसरे दिन महारानी ने आत्म–हत्या करली। हिन्दुओं ने विद्रोह किया किन्तु शाहमीर ने बलपूर्वक दबा दिया। इस प्रकार 1339 में कश्मीर प्रथम बार मुस्लिम व्यक्ति के अधिकार में चला गया। अब यहां मुस्लिमों ने मजहबी उन्माद का कहर बर्षाना शुरू कर दिया। शाहमीर के उत्तराधिकारी सुल्तान सिकन्दर ने भी घाटी में हिन्दुओं का कत्लेआम किया। डल झील लाशों से पट गयी थी। जब भी इसकी सफाई होती है तो नरकंकालों के अवशेष प्राप्त होते रहते हैं। इस प्रकार 13वीं शताब्दी में कश्मीर में इस्लाम का आगमन हुआ था। 14वी शताब्दी में फूला–फला। सुल्तान सिकन्दर के बाद मुस्लिम शासक जैल--उल--अवैदीन (1420–70) सबसे प्रसिद्ध शासक हुआ। सन् 1576 से 1586 तक अकबर ने कश्मीर को अपने राज्य का अंग बनाये रखा। 1752 में यहां अफगानिस्तान के शासक अहमदशाह का शासन हो गया।

सन् 1733 से 1782 तक राजा रंजीत देव ने जम्मू पर राज्य किया। जम्मू 22 पहाड़ी रियासतों में बंटा हुआ था। यहां डोगरा शासक राजा मालदेव ने कई क्षेत्रों को जीतकर अपने विशाल राज्य की स्थापना की थी। 1819–20 में यहां सिक्ख सम्राट महाराजा रणजीत सिंह ने झण्डा फहराया, अपने साम्राज्य का भाग बनाया। रणजीत सिंह के सेनापति जम्मू के डोगरा राजपरिवार के प्रमुख व्यक्ति गुलाब सिंह थे। रणजीत सिंह ने साम्राज्य विस्तार में गुलाब सिंह के योगदानों को देखते हुए उन्हें लाहौर दरबार के अधीन जम्मू के राजा के रूप में मान्यता दे दी थी। गुलाब सिंह की सेना में कर्नल जोरावर सिंह सेनापति थे, जिन्होंने सम्पूर्ण लद्दाख को जीत कर जम्मू राज्य की सीमायें चीन व तिब्बत से मिला दी थी। अफगानिस्तान की गलियों में जोरावर के नाम का डंका बजता था। यहां जब कोई बच्चा रोता था तो उसकी मां कहती थी कि 'बेटा सो जा (चुप हो जा) नहीं तो जोरावर आ जायेगा।' 16 अगस्त, 1834 को चीनी सेना ने प्रथम बार लद्दाख पर हमला किया तो कर्नल जोरावर सिंह ने 10 हजार सेना लेकर किश्तवाड़ होकर लद्दाख की ओर बढ़े और मड़वा, बाड़वन व जास्कर को पार पर पोरग पर मोर्चा संभाला। चीनी सेना से घमासान युद्ध हुआ और चीनी सेना मैदान छोड़कर भाग गयी। चीनी सेना ने कुछ समय बाद पुनः दूसरा हमला किया और पराजित हुई। 1840 में पुनः चीन ने अक्सई (लद्दाख) पर दुतरफा हमला किया और हार गया, जनरल जोरावर सिंह ने विजय प्राप्त की। 7 नवम्बर, 1841 को चीनी सेना ने पुनः लद्दाख पर चौथा हमला किया। पांचवी बार 10 दिसम्बर, 1841 को कारतोंग व तकलाखार में जमीं 10 हजार चीनी सेना से जोरावर सिंह ने मात्र 2 हजार सेना के साथ युद्ध लड़ा। दो दिन तक चले युद्ध में 12 दिसम्बर, 1841 को जोरावर सिंह गम्भीर अवस्था में स्वर्ग सिधार गये। जोरावर सिंह ने मानतलाई का ध्वज छीन लिया था, जो आज भी जम्मू–कश्मीर राइफल की चौथी बटालियन में मौजूद है।

1842 को 'लेह संधि' के बाद 40,000 वर्ग मील (10,4000 वर्ग किमी0) का लद्दाख क्षेत्र भी गुलाब सिंह को प्राप्त हो गया। पहले यहां तिब्बतियों का शासन था, जिनकी राजधानी लेह थी। इसके बाद गुलाब सिंह ने बालटिस्तान जीता (राजधानी स्कार्डू) फिर हंजानगर, इशकुमान, चित्राल एवं गिलगित को जीता फिर राप्ती नदी से

Scanned by CamScanner

लेकर पीर–पंजाल पर्वत श्रेणी के आस–पास के 12,000 वर्ग मील (31,200 वर्ग किमी0) भू–क्षेत्र पर भी कब्जा कर लिया। 16 मार्च, 1846 में हुई अंग्रेजों के साथ 'अमृतसर संधि' के तहत गुलाब सिंह ने 75 लाख रूपये व 6 पश्मीने की शौल देकर कश्मीर घाटी को भी खरीद लिया। बाद में झेलम व सिन्धु नदी के बीच का क्षेत्र एक समझौते के तहत अंग्रेजों से खरीद (केवल रावलपिण्डी व इस्लामाबाद छोड़कर) लिया तो देय रकम में से 15 लाख रूपये कम (75–15=60 लाख रू0+6 पश्मीनो शौल) करके सौदा तय हो गया। इस प्रकार लगभग 3000 वर्ग मील (7800 वर्ग किमी0) का क्षेत्र गुलाब सिंह को और मिल गया। इस प्रकार यह रियासत 1947 तक भारत की समस्त देशी रियासतों से बड़ी थी, जिसकी सीमायें पूर्व में तिब्बत, उत्तर में चीन के सिक्यांग प्रान्त व पश्चिम में अफगानिस्तान से मिला करती थीं। यह 6 भौगोलिक व भाषाई क्षेत्रों में बंटा हुआ था, जिनमें 3 लद्दाख, बालटिस्तान व गिलगित हिमालय के उत्तर में थे तथा 3 दक्षिण में राप्ती नदी से पीर पंजाल पर्वत श्रेणियों तक का क्षेत्र, जम्मू व उसके आस–पास का क्षेत्र तथा कश्मीर घाटी क्षेत्र।

Scanned by CamScanner